गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ९

लोग बाबा जी से पूछा करते थे, "बाबा जी, कितने ही लोग, कितने ही वर्षों से आपके पास हैं। पर ऐसा क्यों लगता है कि उनमें से कुछ लोगों ने ज़रा भी प्रगति नहीं की है?"

बाबा जी कहते, "इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता। सब कुछ उनके ऊपर है। जो प्रगति करना चाहता है, कर सकता है। उसे मेरे पास होने की ज़रूरत नहीं है। उसे केवल सिखावनियों का पालन करना है, अभ्यासों को करना है और गुरु का स्मरण करना है। शीघ्र ही वह बहुत प्रगति कर लेता है।"

तुम अपने मन में जो कुछ सँजोकर रखते हो, वही आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति का प्रेरणा-स्रोत बनता है। सत्त्व-संशुद्धि बोध का एक स्तर है। उसे प्राप्त करना इस पर निर्भर है कि तुम क्या सोच रहे हो, क्या महसूस कर रहे हो और विशेष रूप से यह तुम्हारे कर्मों पर निर्भर है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय २ "अस्तित्व की शुद्धि," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. २९।